उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स

UTTARAKHAND EXAM NOTES

उत्तराखण्ड पीसीएस **(PCS)**, उत्तराखण्ड लोअर पीसीएस **(PCS)**, समीक्षा अधिकारी, प्रवक्ता, एल० टी०, उत्तराखण्ड वन दरोगा, उत्तराखण्ड समूह ग, उत्तराखण्ड कांस्टेबल एंव दरोगा, आबकारी एंव प्रवर्तन सिपाही, उत्तराखण्ड हाईकोर्ट क्लर्क। हमारे द्वारा सभी प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित ऑनलाइन तथा ऑफलाइन हस्तलिखित नोट्स उपलब्ध कराये जाते हैं।

सतपाल चौहान

ADDRESS: L-58 MDDA COMPLEX CLOCK TOWER DEHRADUN UTTARAKHAND
PH: 7579431731, 9411385738, E-MAIL: uttarakhandexamnotes@gmail.com
WEBSITE:- www.uttarakhandexamnotes.com
Facebook Page: https://www.facebook.com/UTTARAKHANDEXAMNOTES/

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579453731
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877036494 सतपाल चौहान

थारु

दुनिया की अधिकांश जनजातियां वनो में निवास और निर्भर और आखेटक संग्रहक रही है और कृषि पर निर्भर न होने के कारण उनके जीवन को स्थायित्व नहीं मिला। लेकिन थारु जनजाति कृषि पर आधारित होने के कारण उनके जीवन को स्थायित्व मिला है। इसीलिए थारुओं की आबादी फलती-फूलती रही है। वे आज उत्तराखण्ड के तराई से लेकर उत्तर प्रदेश के पीलीभीत तक फैले हुए हैं। उनकी विडम्बना यह कि तराई की उपजाऊ जमीन उन्हें धरती पुत्र बनाती थी। वह जमीन खिसक कर बाहर से आकर बसे लोगो के पास जा रही है। मानव विज्ञानी उन्हें मंगोलियन तथा कोई उन्हें किरात वंशीय मानता है। जबकि थारु स्वयं को राजस्थान के राजपूत और राणा प्रताप के वंशज मानते हैं।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877036494 सतपाल चौहान

भूमि से वंचित होते भूमि पुत्र — थारु

थारु उत्तराखण्ड में निवास करने वाली पांच जनजातियों में से एक है। कृषि आधारित थारुओं की बसागत उत्तराखण्ड में तराई से लेकर बिहार तक तथा उत्तर नेपाल तक फैली है। ये उत्तर प्रदेश में लखीमपुर, खीरी, बहराइच एंव गोरखपुर जिलो में रहते है। ० ० ० ०

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड में इनकी आबादी मुख्यत: नैनीताल जिले की सितारगंज तहसील तथा उधम सिंह नगर की खटीमा तहसील में ही केन्द्रित है। सन् 1951 में सर्वप्रथम 214 जनजातियों को अनुसूचित जन जातियों का दर्जा दिया गया तो थारू उस सूची में नही आ सके। इसके बाद 1967 में (द कान्स्टिट्यूशन आर्डर 1967: 78) के तहत) उत्तर प्रदेश के भोटिया, बोक्सा, जौनसारी और राजी के साथ ही थारू को भी अनुसूचित जनजाति का दर्जा दे दिया गया।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

नैनीताल जिले में गदरपुर तथा पौड़ी जिले के लालढांग क्षेत्र में भी थारुओं की बस्ती हैं। खटीमा और सितारगंज विकास खण्डों में थारुओं की आबादी रहती है। 'थारुआट' का मतलब तराई का गहरा एवं दलदला क्षेत्र होता है। इसमे भूमिगत जल अधिक होता है। यहां के नदी नालो में प्राय: बाढ़ आती है। यह क्षेत्र पूर्व में एक घना जंगल था। आज भी यह जल से घिरा हुआ है; इस लिए यहां खूंखार जानवरों से लेकर जान लेवा बीमारी मलेरिया को पैदा करने वाले मच्छरों की भरमार रही है। यहां एक जमाने में मलेरिया बहुत होता था इसलिए यह मलेरिया जोन घोषित था। क्षेत्र में प्राचीन थारू जाति के लोगो के अलावा कोई बाहरी व्यक्ति बसने की हिम्मत नही जुटा पाता था। मच्छरो के बीच अपना अस्तित्व बचाने में कामयाब थारुओं को 'मलेरिया प्रूफ' मानव कहा जाता था

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
चतपाल चौहान सर 7579453731

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

थारु शब्द की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों में मतैक्यता नहीं है। थारु शब्द की उत्पत्ति "तरुवा" शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ भीगना होता है।

नेसफील्ड ने थारु की उत्पत्ति थार (शब्द से) मानी है। उस समय थार शब्द का अर्थ स्थानीय बोली में 'जंगलवासी' से लगाया जाता था। क्रूक ने थारु शब्द की उत्पत्ति दारु माना है।

⇒ नोल्स के अनुसार - थारु लोगों में अपहरण विवाह प्रथा थी।

अधिकांश मानव विज्ञानियों ने थारुओं को मंगोलियन नस्ल का तथा ऐतिहासिक किरातों का वंशज माना है।

रिजले ने थारु जनजाति को एक मिश्रित प्रजातीय समूह बताया है। और शारीरिक विशेषताओं के आधार पर मंगोल प्रजाति के निकट माना है।

थारु जनजाति के लोग स्वयं को भारतीय संस्कृति के स्वाभिमान के प्रतीक महाराणा प्रताप के सैनिक मानते हैं।

(4)

उत्तराखण्ड एग्जाम गोरस 7579943731
सतपाल चौहान सर

शारीरिक गठन -

थारुओं को नोल्स ने द्रविड़ प्रजाति के अन्तर्गत माना है और कहा है कि दक्षिण की ओर से तराई में आकर ये लोग बस गये मजूमदार का मत है कि इनकी शारीरिक रचना मंगोलॉइड प्रजाति से मिलती-जुलती है, जैसे तिरछे नेत्र, गाल की हड्डियां उभरी हुई, रंग भूरा-पीला, शरीर और चेहरे पर बहुत कम और सीधे बाल, मध्यम और सीधे आकार नाक आदि। जबकि अन्य शारीरिक लक्षणों में ये नेपालियों से मिलते-जुलते हैं, क्योंकि कई शताब्दियों से इनके वैवाहिक सम्बंध नेपाल के पश्चिमी क्षेत्र में बसे वहां के थारुओं से रहे हैं। थारू स्त्रियों का रंग अधिक साफ होता है।

वास्तविकता यह कि थारुओं में मंगोलॉइड और भारतीय जातियां दोनो के मिश्रित शारीरिक लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। सांस्कृतिक सम्पर्कों के फलस्वरूप थारू जाति के शारीरिक लक्षणों में पर्याप्त परिवर्तन हुए हैं। यद्यपि थारुओं का औसत कद आज भी छोटा ही होता है। जबकि कुछ विद्वान इन्हे भारत-नेपाल के आदिम निवासी सिद्ध करते हैं, क्योंकि इनकी बोली हिन्दी और नेपाली से प्रभावित है।

7579943731 उत्तराखण्ड एग्जाम ग्रोरस
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल-चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877038494 सतपाल चौहान

आजीविका –

आर्थिक दृष्टि से थारु एक आत्मनिर्भर जनजाति है, जो अपनी आवश्यकता से सम्बन्धित सभी वस्तुओं का स्वंय ही उत्पादन करते है। थारुओं का मुख्य व्यवसाय कृषि है तथा जमीन से जुड़े के कारण यह स्थिर जनजातियो में से एक है। खेती के साथ ही वह अपने भोजन के लिए मत्स्य तथा वन्य जीवों का आखेट भी करते हैं। वे अपने रहने के लिये मकान स्वंय बनाते है। इन्हे मवेशियो, सुअर तथा मुर्गी पालन में विशेषज्ञता हासिल है।

थारू महिलाए टोकरी, चटाई, दरी और हाथ के पंखे बनाने सिद्धहस्त होती है। यह एक खास किस्म की मिट्टी में भूसा मिलाकर - बड़े बड़े तथा विभिन्न प्रकार के कोठार बनाने में माहिर होती है। इन कोठारों को कुठिया या कठली भी कहते है।

थारुओं का खेती के अलावा मछली का शिकार दूसरा मुख्य कार्य है। इन्हे चावल और मछली बहुत पसंद है। गांव के सभी स्त्री पुरुष 20 या 30 के समूहों में दूर बहती हुई शारदा नदी या नहर में जाल या छपरिया लेकर जाते है। और शाम तक मछली मारने के बाद लौटते है। रोचक बात तो यह है कि पूर्व में स्त्री पुरुष मछली पकड़ने अलग- अलग जाते थे..

PTO

सतपाल-चौहान
उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579453731

तथा प्राय: स्त्रियां पुरुषों की पकड़ी हुई और यहां तक कि उनकी छुई हुई मछली नहीं खाती थी

अधिकतर थारुओं को कुशल एवं अपर्याप्त कृषि से साल भर के लिए खाद्यान्न प्राप्त नहीं होता। वे स्वभाव से भोले और सुस्त होते हैं। अभी तक इनके फसल बोने से लेकर उपज को बाजार में बेचने तक सभी ढंग परंपरागत है।

शिक्षा के प्रसार के साथ ही (थारुओं) युवाओं को सरकारी तथा निजि क्षेत्र में रोजगार मिलने लगा है. फिर भी सरकारी नौकरियों और व्यवसाय के मामले में थारू भोटिया तथा जौनसारी से काफी पीछे है. खटीमा नगर थारुओं की जमीन पर बसा है, मगर उसमें व्यवसाय करने वाले 90 प्रतिशत से अधिक लोग गैर थारू हैं। आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक उत्थान के मामले में थारू जनजाति को भोटिया और जौनसारी जनजातियों के बाद रखा गया। थारू समाज में श्रमिक और भूमिधर में अन्तर दिखाई नहीं देता। श्रम का भुगतान नगद में नहीं बल्कि सामग्री में होता है। इसीलिए मानव विज्ञानी तथा नियोजनकर्ता इसमें बंधुआ मजदूरी चिन्हित नहीं कर पाये।

P.T.O

7579453731 उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877936494 सतपाल चौहान

सामाजिक पद्धति : थारुओं में पितृसत्तात्मक, पितृवंशीय और पितृस्थानीय परंपरा पाई जाती है। लेकिन समाज मे महिलाओं का महत्व और भूमिका पुरुषों से कम नहीं होती। इस समुदाय की महिलाएं अधिक सम्मानित एवं विशेषाधिकार प्राप्त होती हैं। वे सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में निर्णायक भूमिका का निर्वाह करती है। ये महिलाएं स्वयं को चित्तौड़ की रानी पद्मावती की वंशज मानती है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877936494 सतपाल चौहान

टर्नर (1931) के मत में थारु समाज दो अर्द्धांशों में बंटा था जिसमे से प्रत्येक के छह गोत्र होते थे। दोनों अर्द्धांशों में पहले तो ऊंचे अर्द्धांशों में नीचे अर्द्धांश की कन्या का विवाह संभव था परन्तु धीरे-धीरे दोनों अर्द्धांश अंतर्विवाही हो गये "काज" और 'डोला' अर्थात वधूमूल्य और कन्या अपहरण पद्धति से विवाह के स्थान पर अब थारुओं में भी अब 'सांस्कारिक' विवाह होने लगे हैं।

अब भी दूर दराज के थारुओ के गांवो में अपने ही ढंग से विवाह होते हैं। इनमें वर पक्ष की ओर से किसी मध्यस्थ (मस्पतिया) द्वारा विवाह की बातचीत चलती है। . . . . .

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877036494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

पहले इनमें दोनों पक्षों में लड़कियों के अदला-बदली की प्रथा थी क्योंकि वर पक्ष को दुल्हन के पिता के 'टेक' के रूप में दुल्हन मूल्य अदा करना पड़ता था। अब इनमें 'तीन टिकठी' प्रथा जोर पकड़ रही है। इस व्यवस्था के तहत तीसरे परिवार से दुल्हन उपलब्ध कराई जाती है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877036494 सतपाल चौहान

थारुओं में विवाह फागुन के शुक्ल पक्ष में होते हैं, परन्तु कभी-कभी किसी का बैशाख के शुक्ल में भी विवाह हो जाता है। इसे 'लठमरवा' भोज कहते हैं। दोनों पक्षों में जब विवाह हो जाता है तो उसे "पक्की पोढ़ी" कहते हैं। विवाह से एक दिन पूर्व भूमसेन की पूजा होती है। थारुओं में विवाह संस्कार प्रचलित है परम्परागत रीतियों के साथ सम्पन्न किया जाता है। इसमें "चूल्हा बैठाना", "भूमिया पूजन", "सर देना", "तेल चढ़ावा", "पहरावा", "जौंणी", 'कन्यादान', "भवर" आदि प्रमुख रस्में हैं। उत्तराखण्ड की अन्य जातियों में जौना प्रथा नहीं है। इसके अलावा विधवा विवाह, जिसमें "चुटकया" तथा उढाना" विवाह प्रचलित है। . . . .

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877936494 सतपाल चौहान

'छुटकटा' विधवा पुनर्विवाह में विधवा अपने दुसरे पति स्वंय अपने ही घर पर (अपने कि पूर्व पति के घर) रख लेती है। इस प्रकार के पति की चुटिया काट दिया जाता है।

- **डाला प्रथा** – मे विधवा से विवाह करने का इच्छुक व्यक्ति पारम्परिक सहमति से उसे अपने घर ले जाता है। वे आपस में पति-पत्नी के रूप में रहने लगते हैं।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877936494 सतपाल चौहान

⇒ लड़के के विवाह में 'गुड़यां रोटी' "हल्दी रोटी" तथा "कच्ची रोटी" के नाम पर समस्त अतिथियों को भोज दिया जाता है।

मृत्यु संस्कार – मृत्यु होने पर परिवार के सदस्य शव को स्नान कराकर उस पर हल्दी का लेप कर उसे नये कपड़े पहना देते हैं। फिर शमशान में ले जाकर लाश को आधा जला देते हैं; जबकि पहले इसे गाड़ देते थे। अन्त में घर की शुद्धि कर समाज को भोज दिया जाता है। जब वे मुर्दे को दफना कर लौटते थे तो चौराहे पर एक छोटी सी पुलिया मृतक की आत्मा को संकटो से पार लगाने के लिए बनाते थे। थारुओं में अधिकांश खुशी के मौको पर सामूहिक भोज और शराब का प्रचलन है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

थारुओं के त्योहार- थारुओं मे अन्य हिन्दुओं की तरह ही होली, दीपावली, दशहरा गंगा स्नान आदि त्योहारो को बड़े धूम धाम से मनाते है। थारुओं मे होली एक सांस्कृतिक महोत्सव है। जिसे वे पूरे एक माह आठ दिन तक मनाते हैं। होलिका दहन से पहले जिन्दी होली होती है और फिर बाद मे मरी होली। शिवरात्री से शुरू होने वाली होली होलिका दहन तक जिन्दी होली के रूप मे मनाई जाती है।

सामाजिक संगठन - बड़े परिवार को व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए परिवार का एक योग्यतम पुरुष 'गन्चूर' या 'मालिकार' चुना जाता है। इसके लिए उस पुरुष का सबसे बुजुर्ग होना जरूरी नहीं है। इसी प्रकार परिवार की महिलाओं में से एक 'गन्चूरेणा' या मालाकिन चुनी जाती है।

थारुओं की तीन शाखाएं और 26 उपशाखाएं है। उपजातियों का नामकरण क्षेत्र विशेष के नाम पर भी हुआ है जैसे डांग के डंगवारिया चितवान के चितवानिया, एवं नवलपुर के थारुओं को नवलपुरिया कहते है। प्रत्येक उपजाति समूह कई 'कुरी' या 'गोरियाल' से बना होता है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहान सर

अन्धविश्वास और आस्था के वनों को भूत-प्रेतों से भरा मानते हैं। इसलिए वे शाम को या रात को जंगलो में जानवरो से अधिक भूत-प्रेतो से डरते हैं। इनमें अवसर विशेष पर देवता विशेष की पूजा करने का रिवाज है।

- साथ ही सम्पत्ति की देवी — जाखिन, की पूजा होती है
- फसल का देवता — जगमाठिया, देवता
- सांपो से रक्षा करने वाला — सम्पेहेठिया देवता
- * भेड़ियो से बला टालने वाला — भण्डुवा
- * बच्चो का रक्षक — अखेड़िया

इसके अलावा भी थारू मन्दिरों में सैकड़ो आत्माओं और भूत-पिशाचों के प्रतीक रखे जाते हैं।

थारू गांवों मे चीवर मन्दिर होता है, जिसमें गांव के देवता को घर के अन्दर स्थापित किया जाता है। जबकि यमराज तथा भैंसासुर को गौशाला के अन्दर रखा जाता है। ढोर-धनी (पशु रक्षक) को गांव के निकट रास्ते में रखा जाता है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

विकास और थारु–

जनजातियों के हितो के संरक्षण के लिए भारत(सरकार) ने संविधान के प्रावधानों के अन्तर्गत 1967 में उत्तर प्रदेश की 5 अन्य जातियों के साथ ही थारुओं को अनुसूचित जनजाति घोषित किया था इसके बाद जनजातियों के आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए लखनऊ मे एक पृथक जनजाति विकास निदेशालय की स्थापना की। चूंकि इस निदेशालय को धन सीधे भारत सरकार से मिलता था। इसलिए निदेशालय द्वारा कुछ जनजाति क्षेत्रो में एकीकृत जनजाति विकास परियोजनाएं 1993 में शुरू की गई।

थारुओं मे धर्म परिवर्तन: जोगीठेर, नगला, सहजना –चांदा, मोहनपुर, नौगवा, ठगू, पहनिया थारु परिवार धर्म परिवर्तन कर ईसाई बन गए है ये सारे गांव खटीमा विकास खण्ड के हैं जब गांवो में कोई बीमार होता है तो वे उसे झाड़-फूंक और तंत्र-मंत्र के लिए भरारे के पास ले जाते है। भरारे की तन्त्र-मंत्र विद्या जब काम नही आती है तब बीमार की बीमारी गम्भीर होती है तो तब लोग अक्सर बीमार को पोलीगंज स्थित ईसाइयों के सेंट पैट्रिक अस्पताल ले जाते हैं वहां ईसाइयों का मुफ्त इलाज होता है बाल्कि और लोगो से भरपूर शुल्क लिया जाता है कहते है मरता क्या नही करता यह कहावत थारुओं पर भी लागू होती है। वे मजबूरी में ईसाई बन जाते है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स